e-Library Science Research Journal
ISSN : 2319-8435
Impact Factor : 2.2030(UIF)
Vol.3 | Issue.4 | Feb. 2015
Available online at www.lsrj.in

कन्हैया लाल सेठिया की कविताओं में जीवन दर्शन

रेखा शेखावत

सारांश :-मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य है और साहित्य की सभी विधाओं में मानव के चिंतन और भाव लहरियों को शब्दबद्ध किया जाता है । साहित्य की सर्वाधिक भाव प्रवण विधा काव्य का उद्भव भावों के गतिशील सहज उच्छलन से होता है । लयात्मकता और गेयता काव्य की अपनी पहचान है । काव्य वास्तव में वह विधा है जो सहृदय को मधुरिम भावों से सराबोर कर देती है । वर्तमान संक्रमित और चकाचौंध के परिवेश में प्रत्येक मन तर्क – वितर्क के हिचकोले खाता दिखाई देता है । वर्तमान परिवेश में चाहे विज्ञान कितना ही आगे क्यों न बढ़ा हो पर इससे साहित्य की गरिमा में कोई फर्क नहीं आया है , बल्कि वह पहले की अपेक्षा आज ज्यादा प्रासंगिक हो गया है ।

प्रस्तावना :

भारतीय आदर्श और संस्कृति के उपासक श्री कन्हैयालाल सेठिया बहुमुखी प्रतिभासंपन्न कथाकार हैं । इनकी सशक्त लेखनी से कितनी ही बहुमूल्य कृतियों का सृजन हुआ है । श्री सेठिया की रचनाएँ मुझे तो वेदमंत्रों की तरह जीवन को प्रेरित करने वाले सूत्रात्मक भावों की तरह लगती हैं । इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए हरिवंशराय बच्चन ने लिखा है कि '' आप की कविता क्या , मंत्र ही हैं – छोटे छोटे सूत्रों में जीवन का गहन रहस्य ।''

सेठिया जी के विविध काव्य संग्रह हिंदी के अभिनव काव्य संग्रह है । इनकी रचनाओं के माध्यम से एक नई और मधुर अनुभूति से परिचय होता है । इन संग्रहों में सेठिया जी ने जीवन के शाश्वत पक्षों के साथ – साथ सत्य को भी वाणी दी है । इनकी सर्जना का केंद्रीय तत्व है उनकी सौंदर्य चेतना जो उनकी कविताओं के माध्यम से विविध आयामों में साक्षात् होती हैं । इस सौंदर्य को आत्मसात करने की प्रकिया में वे बड़े से बड़े जाखिम के लिए भी तत्पर रहते हैं । उनकी कविताओं में प्रेम निवेदन की अवधारणा किसी पार्थिव सत्ता के प्रति नहीं अपितु किसी सार्थक सत्ता के प्रति प्रतीत होती है ।

हिंदी साहित्य के मनस्वी श्री सेठिया ने चिंतन के उर्वर धरातल से हृदयस्पर्शी गंभीर भावों की सृष्टि करते हुए 'निर्ग्रंथ' में धरती की क्षण भंगुरता को सहज ही स्वीकारा है । किंतु साथ ही उन्हें विश्वास है कि आराध्य की अनुकंपा से दिव्य भावों का प्रस्फुटन होता है और जीवन पथ की बगिया में वसंतागमन अवश्य होता है –

''किसी ने
बाँटे फल
किसी ने फूल
किसी ने किसलय
पर दिन ढले
सब गले
कुम्हलाये
मुरझाये
तुम आए
बाँटा बीज – मंत्र
..... बच जाएगी
बगिया की हरियाली ।''

अपने अभिनव पक्षों के कारण यह विषय हिंदी कविता के विविध पक्षों के साथ राजस्थानी पक्षों में भी महत्वपूर्ण

है और साथ ही यह अपनी अभिव्यक्ति के द्वारा लोक जीवन व मानस में कविताओं के माध्यम से जीवन दर्शन को व्याख्यायित करने में अवश्य ही सफल होगा ।

वर्तमान युग में जब प्रत्येक आँगन में दीवार खड़ी होती दिखाई दे रही हो ऐसे में कबीराना अंदाज मे कवि सेठिया जी का काव्य अहिंसा और सर्वजन हिताय का पाठ पढ़ाता दिखाई देता है ।

'' अहिंसा नहीं है
हिंसा का
नकारात्मक बोध
जिसमें
दृष्टि से परे
दर्शन
जीवन से परे आत्मा
जिसकी मीमांसा अनेकांत
भूमिका सर्वोदय ।''

सेठिया जी का प्रेम निवेदन अपार्थिव न होते हुए भी पवित्र है । उनका प्रेम मनुष्य को स्फूर्ति देता है । उनकी कविताओं में कुछ रूपों की बानगी इस तथ्य को प्रतिपादित करती है ।

''मैनें तो जलना ही सीखा
जब से जागा जलन लिए हूँ
अविदित कर से स्नेह पिए हूँ
मिला न मुझको आँचल प्रिय का
झंझा में ही पलना सीखा ।''

सेठिया जी की विविध कविताओं में प्रेम का आकर्षण जीवन भर केंद्र का विषय है । वे अपने प्रिय की पूजा को हमेशा तत्पर रहते हैं –

''प्रिय का पूजन दीप जला ले
धिरती सांझ मिलन की बेला
अंतर में भावों का मेला
चपल अंगुलियाँ चला
वीणा के अनमिल ढीले तार मिलाले ।''
कवि का मन मिलन के लिए आतुर है , जिस प्रकार वीणा उँगलियों के लिए ।

सौंदर्य का पान करना , उसे आत्मसात करना एक धरातल है , उसे रचना दूसरा धरातल । सेठिया जी में दोनों ही का सम्यक रूप दृष्टिगोचर होता है । वे धरती से जुड़ी अपनी कविताओं में भी यही भाव रखते हैं । प्रकृति कवि को अपनी ओर खींचती है और कवि भी उसमें खिंचा चला जाता है ।

''अंबिया की बगिया में कोई
कोयल कूक नहीं पाएगी ।
सावन की महफिल में कोई
मयूरी नाच नहीं पाएगी ।''

सेठिया जी का अंतर्मन और बाहर का परिवेश विविध होते हुए भी एक दूसरे से राग – रंजित है ।

''तुम बंद कली , मैं खिला सुमन
मैं तुम में मुझ में बीच
तुम भविष्य में वर्तमान
जो रहा भूत को खींच ।''

कवि अपने प्रिय को कहता है कि तुम बंद कली हो और मैं खिला हुआ सुमन हूँ । तुम्हारे और मेरे बीच कोई तो आकर्षण है जो एक दूसरे को अपनी ओर खींचता है जैसे भविष्य वर्तमान की तरफ । सेठिया जी की सौंदर्य चेतना उनकी राग चेतना का प्रायः प्रतिबिंबन करती है । सेठिया जी जब प्रकृति सौंदर्य में रमते हैं तो उनका राग संवलित मन प्रकृति के सुंदर दृश्यों को गहरे अर्थ दे जाता है –

''फूल को खिलते देखा है
प्रातः में उसको हँसता देख
हुए थे कुंठित कितने शूल
द्वेष को दे दर्शन का रूप
बताया हँसना उसकी भूल ।''

सेठिया जी की सौंदर्य चेतना का यह विशिष्ट रूप है । रागात्मकता में डूबे कवि के लिए प्रकृति का सौंदर्य कैसा – कैसा रूप धारण करता है , इसके चित्र उनके काव्य में जगह – जगह प्रतिबिंबित होते हैं । सौंदर्य और कवि मन की उदात्तता का गहरा संबंध जगह – जगह विशिष्ट आकार लेता प्रतीत होता है । ढेरों कविताएँ कवि के खजाने में भरी हैं और उनके सबसे अधिक अवदान रागात्मक भूमि का है । यह स्वाभाविक है कि जो हमें सुंदर दिखता है उसे हम प्रेम करते हैं । साथ ही जिसे हम प्रेम करते हैं वह हमें सुंदर भी दिखता है । सभी पहलुओं के चित्रण के साथ – साथ उनकी कविता और सौंदर्य चेतना आपस मे एक दूसरे की पूरक प्रतीत होती हैं ।

इन पक्षों के साथ – साथ सेठिया जी ने अपने काव्य में जीवन के लगभग सभी पक्षों को अपने काव्य का विषय बनाया है । दर्शन और संवेदना के पक्ष भी उसमें महत्वपूर्ण रूप में उभरे हैं ।

अपने इन्हीं प्रभावी पक्षों के चलते ''कन्हैया लाल सेठिया की कविताओं में जीवन दर्शन'' न केवल अभिनव है बल्कि शोध विषय के रूप में भी सर्वथा उपयुक्त है ।

आधार ग्रंथ सूची

1.रमणियां रा सोरठा
2.गळगचिया
3.मींझर
4.कूंकूं
5.लीलटांस
6.धर कूंचा धर मंजळां
7.मायड़ रो हेलो
8.सबद
9.सत्वाणी
10.अघोरीकाळ
11.दीठ
12.कक्को कोड रो
13.लीकलकोळिया
14.हेमाणी
15.वनफूल
16.अग्निवीण
17.मेरा युग
18.दीपकिरण
19.प्रतिबिंब
20.आज हिमालय बोला
21.खुली खिड़कियां चौड़े रास्ते
22.प्रणाम
23.मर्म
24.अनाम
25.निर्ग्रन्थ
26.स्वगत
27.देह – विदेह
28.आकाश गंगा
29.वामन विराट
30.श्रेयश
31.निष्पत्ति
32.त्रयी
33.ताजमहल
34.गुलचीं